Lecture (13)

TOPIC :-

Sunita Kumari
Subject, Philosophy(H)
B.A Part-II paper-III (H)

(1) Dharmakriti!

Ans:-) धर्मकृति में व्यक्ति को कैसे और किस भावना से चलने पर धर्म की ओर अग्रसर यानी उस मार्ग पर शुभ फल की प्राप्ति होती है। क्योंकि जो जैसे कर्म करते ~~क~~ है। वैसे ही आगे की विकास की प्रक्रिया होती है धर्म की ओर सफलता प्राप्त ~~क~~ करने में तत्पर रहता है। (Religiones of dharkriti):

धर्म कितने प्रकार के हो, है। मनुष्य की सोच धर्म की ओर कैसे अग्रसर होता है। इस बात को लेकर अनेक प्रकार की संकाय हमें देखने को मिलती है।

1. नैतिक धर्म।
2. अनैतिक धर्म।

धर्मकृति में नैतिक धर्म का

P.T.O.

अर्थ यह होता है। व्यक्ति को समाज पर आधारित प्रश्न होता है और जैसे व्यक्ति अपने समाज में कैसा कर्म करता है। उसी तरह वह धर्म को ओर बढ़ता है। धर्म मानी आधिक पूजा पाठ पर ध्यान देना धर्म से लोग अच्छा जीवन (व्यक्तित्व) बिताते हैं और वह और न्याय की ओर बढ़ता है। समाज की दृष्टि से जो जैसे अपने (Creed)

धार्मिक दृष्टि से यह सब देखने को मिलता है। मनुष्य का अपना अपना स्वभाव होता है कि किस तरह की धर्म करें। मंदिर में पूजा करने के लिए कोई अपने दृष्टि से संतुष्ट भावना से पूजा पाठ धर्म कर्म में विश्वास करता है।

न्याय वैशेषिक के दार्शनिक ने अपने शब्द में इसी प्रकार व्यक्त किया है। इसी प्रकार जैसे :→ धर्मकृति में विकास की ओर व्यक्तिक

P.T.O.

जीवन कैसे चलता है। किस प्रकार का धर्म शुभ यानी अच्छा फल देता है और किस प्रकार का फल अशुभ यानी खराब फल मिलता धर्म दर्शन यही सब बातों पर विशेष (~~Alo~~ (Dharmakriti)

रूप से बल दिया गया है। धर्म करना व्यक्ति का एक गुण होता है वह आगे की ओर धर्म पूजा ~~पा~~ पाठ ~~पति~~ करना नैतिक धर्म अधर्म में विश्वास किस प्रकार करता है वह आने वाले समय में वह शुभ फल यानी अच्छा फल किस प्रकार मिलता है। इसी प्रकार देखने को मिलता है।

आधिक पूजा करना देवियों की पूजा करनी अपने-अपने देवता की पूजा करना ही व्यक्ति का परम लक्ष्य है। वह आने वाला किये गये कर्म के आधिन ही फल भोगता है। धर्मकृति में यही सब बतलाया है।

(E. N.D.)